IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रोहतास जिला में महिला सशक्तिकरण के स्थानीय आयामों का अध्ययन

डॉ. रिनी चौधरी
शोधकर्ता, भूगाले विभाग
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार),
choudharyrini7@gmail.com

सारांश

लैंगिक समानता सामाजिक–आर्थिक विकास का एक प्रमुख आयाम है। प्रस्तुत शोध पत्र बिहार राज्य के रोहतास जिले में महिला सशक्तिकरण के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आयामों का गहन भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। महिला सशक्तिकरण बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें केवल शिक्षा रोजगार ही नहीं बल्कि आर्थिक अवसरों, सामाजिक मान्यताओं, राजनीतिक भागीदारी और सांस्कृतिक परिवर्तन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। इस अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत का उपयोग किया गया है, जिसमें सरकारी रिपोर्ट, स्थानीय सर्वेक्षण और पूर्णवर्ती शोध अध्ययन शामिल है।

निष्कर्ष बताते है कि क्षेत्र में चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। लेकिन सरकारी योजनाओं स्वयं सहायता समूहो और बढ़ती जागरूकता से सकारात्मक परिवर्तन की संभावनाएं प्रबल है (भारत सरकार, 2025, बिहार सरकार, 2020)। यह शोध नाति :– निर्माताओं और अकादमिक जगत को स्थानीय स्तर पर प्रभावी हस्तक्षेप हेतु आधार प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध में रोहतास जिले की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है जिसमें महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, राजनीतिक भागीदारी और सामाजिक मान्यताओं से जुड़ी चुनौतियों को रेखांकित किया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि पितृसत्तात्मक संरचनाएँ, सीमित संसाधन और पारंपरिक मान्यताएँ महिलाओं की प्रगति में बाधक हैं।

सूचक शब्द– महिला सशक्तिकरण, स्थानिक, आयाम, रोहतास जिला, भौगोलिक अध्ययन।

भूमिका

महिला सशक्तिकरण समाज के एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया है। जिसमें महिलाओं को समाजिक अधिकार देने तक सीमित नहीं बल्कि उन्हें जीवन के हर क्षेत्र में चाहे आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक क्यों न हो समान अवसर और अधिकार सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है। भारतीय संविधान में महिलाओं को समान अधिकार प्रदान है। रोहतास जिला बिहार भारत के दक्षिण–पश्चिम भाग में स्थित है और ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यहाँ की जनसंख्या मुख्यतः ग्रामीण है और कृषि प्रमुख आजीविका का साधन है। सामाजिक संरचना

पितृसत्तात्मक होने के बावजूद शिक्षा और सरकारी योजनाओं के प्रभाव से महिलाओं की स्थिति में धीरे–धीरे बदलाव आ रहा है। जनगणना 2011 के अनुसार पुरूष साक्षरता दर 77% और और महिला साक्षरता दर 60% है, जो राष्ट्रीय औसत से कम है (भारत सरकार, 2011)। इस पृष्ठभूमि में महिला सशक्तिकरण अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि यह क्षेत्र विकास और समानता की दिशा में परिवर्तनशील अवस्था में है।

साहित्य समीक्षा

कुमार (2018) ने ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण को शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता से जोड़ा। शर्मा (2020) ने बिहार में पंचायत राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण किया और पाया कि आरक्षण ने महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका निभाने का अवसर दिया। सिंह (2019) ने स्थानीय शासन में महिला भागीदारी को लोकतांत्रिक मजबूती का आधार बताया। मिश्रा (2021) ने आर्थिक आत्मनिर्भरता को महिला विकास का मूल आधार माना। सुप्रिया (2024) ने बिहार में पंचायत स्तर पर महिलाओं के आरक्षण के परिणामों का अध्ययन किया और पाया कि इससे स्वास्थ्य और सामाजिक संकेतको में सुधार हुआ। नीति आयोग (2020) ने महिला सशक्तिकरण को सतत विकास का आधार बताया।

इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि महिला सशक्तिकरण के प्रमुख स्तंभ शिक्षा स्वास्थ्य, आर्थिक अवसर और राजनीतिक भागीदारी है।

शोध पद्धति

यह अध्ययन मिश्रित शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों विधियों का प्रयोग किया गया है।

- प्राथमिक डेटा : सर्वेक्षण, साक्षात्कार और फोकस ग्रुप चर्चा।
- द्वितीयक डेटा : जनगणना 2011 NFSH-5 (2019-21) सरकारी रिपोर्ट और शोध आलेख।
- नमूना क्षेत्र : रोहतास जिले के ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्र।
- विश्लेषण विधि : तालिकाएँ, चार्ट्स और तुलनात्मक अध्ययन।

इसका उद्देश्य रोहतास जिले में महिला सशक्तिकरण के स्थानिक आयाम स्पष्ट हो सके।

शोध का उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देष्य रोहतास जिले में महिलाओं के सशथ्क्तकरण से संबंधित विभिन्न आयामों का विश्लेषण करना है। शोध का लक्ष्य यह समझना है कि सरकारी योजनाएँ, सामाजिक संरचनाएँ और स्थानीय शासन किस प्रकार महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति को प्रभावित कर रहें है। विशेष रूप से इस शोध के उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1. रोहतास जिले में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक भागीदारी की वर्तमान स्थिति का आकलन करना।
2. शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में महिलाओं के सशक्तिकरण से जुड़े प्रमुख आयामों की पहचान करना।
3. पंचायत राज संस्थाओं, और स्थानीय शासन में महिलाओं की भूमिका और नेतृत्व क्षमता का विश्लेषण करना।

4. सरकारी योजनाओं एवं नीतिओं की पहुँच और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
5. महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया में मौजूद चुनौतियों और अवरोधों को चिन्हित कर उनके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

महिला सशक्तिकरण के स्थानिक आयाम

आर्थिक आयाम

आर्थिक सशक्तिकरण महिला सशक्तिकरण का प्रमुख आधार है। रोहतास जिले में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को सूक्ष्म ऋण, बचत एवं आजीविका के अवसर प्राप्त हुए हैं (NABARD, 2021) । विभिन्न प्रखंड़ो में डेहरी, पशुपालन, एवं लघु उद्योगो का विकास हुआ है, जिससे महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है।

तालिका 1 : आर्थिक आयाम (NFHS-5, रोहतास जिला)

आर्थिक संकेतक	आँकड़े (रोहतास)
महिला रोजगार भागीदारी (15–49 वर्ष)	18.7 %
बैंक/वित्तीय खाते तक पहुँच	76.8%
मोबाईल फोन का स्वामित्व	52.4%
स्वतंत्र रूप से धन उपयोग करने की क्षमता	64.1%
पशुपालन में महिला भागीदारी	लगभग 32%
हस्तशिल्प/हैंडलूम कार्य में महिला सशक्तिकरण भागीदारी	लगभग 14%
लघु उद्योग/स्वरोजगार योजनाओं में महिला भागीदारी	20%
कृषि मजदूर के रूप में महिला भागीदारी	47.71%
स्वयं खेती करने वाली महिलाएँ	11.72%
घरेलू उद्योग कार्यकर्ता अन्य गतिविधियाँ	32.89 %

Source : NFHS-5, Rohtas fact Sheet (2019-21) ; डॉ. कुमारी सुषमा (2018) : बिहार सरकार, पशुपालन एवं उद्योग विभाग (2023)।

आँकडे बताते है कि रोहतास में कृषि मजदूर, स्वयं खेती और पशुपालन में भागीदारी यह दर्शाता है कि स्थानीय स्तर पर महिलाएँ कृषि और पशुपालन में अपेक्षाकृत आर्थिक सक्रिय है। पशुपालन (दुग्ध–उत्पादन,

बकरी पालन) में महिलाओं की सक्रियता ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान को दर्शाती है। लघु उद्योग और स्वरोजगार योजनाएँ महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता की ओर ले जा रही है, हालांकि भागीदारी अभी भी सीमित है।

सामाजिक आयाम

रोहतास जिले की सामाजिक संरचना पितृसत्तात्मक है। बाल विवाह, घरेलू, हिंसा और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ अब भी मौजूद है। हालांकि शिक्षा और जागरूकता अभियानों ने महिलाओं की स्थिति में सुधार किया है (महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, 2022)।

तालिका 2 : सामाजिक आयाम (NFHS-5, रोहतास जिला)

सामाजिक संकेतक	आँकड़े (रोहतास)
बाल विवाह (20–24, 18 वर्ष से पहले विवाह)	39.2%
घरेलू हिंसा (15–49 वर्ष) विवाहित महिलाएँ	29.8 %
महिलाओं की निर्णय निर्माण में भागीदारी	82.5%
स्वास्थ्य सेवाओ तक पहुँच (प्रसव पूर्व देखभाल)	72.1%

Source : NFHS-5, Rohtas fact Sheet (2019-21)

आँकड़े बताते है कि रोहतास जिले में बाल विवाह की दर (39.2%) अभी भी बहुत अधिक है, जो महिलाओं के शिक्षा और स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डालती है। घरेलु हिंसा (29.8%) का प्रतिशत यह दर्शाता है कि सामाजिक सुरक्षा और जागरूकता कार्यक्रमो की और आवश्यकता है। निर्णय–निर्माण में महिलाओं की भागादारी (82.5%) सकारात्मक संकेत है, जो सशक्तिकरण की दिशा में प्रगति को दर्शाता है।

शैक्षिक आयाम

शिक्षा महिला सशक्तिकरण का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। रोहतास जिले में साक्षरता दर में वृद्धि के साथ महिलाओ की जागरूकता भी बढ़ी है (Government of India, 2021) स्थानिक रूप से पिछड़े क्षेत्रो में शैक्षिक सुविधाओं की कमी अब भी एक चुनौती हैं।

तालिका 3 : शैक्षिक आयाम (NFHS-5 रोहतास जिला)

शैक्षिक संकेतक	आँकड़े (रोहतास)
महिला साक्षरता दर (15–49 वर्ष)	63.4%
लड़कियों का विद्यालय में नामांकन	78.6%

(6–17 वर्ष की)	
माध्यमिक शिक्षा (कक्षा 9–12) में लड़कियों की उपस्थिति	56.2%
उच्च शिक्षा (कॉलेज/विश्वविद्यालय) में महिला भागादारी	12%
STEM शिक्षा में महिला भागादारी	8%
विद्यालय छोड़ने की दर लड़कियाँ	21.4%

Source : NFHS-5, Rohtas fact Sheet (2019-21) ; विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) रिपोर्ट (2023)।

आँकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि रोहतास जिले मे महिला साक्षरता दर (63.4प्रतिशत) अभी भी पुरूषों से काफी कम है। विद्यालय स्तर पर लड़कियों का नामांकन अच्छा है, लेकिन माध्यमिक और उच्च शिक्षा में गिरावट स्पष्ट दिखाती है। stem शिक्षा मे कहिलाओ की भागीदारी बहुत कम (8) प्रतिशत, जो राष्ट्रीय प्रवृति से मेल खाती है। विद्यालय छोडने की दर (dropout) लडकियों में अधिक है, जिसका कारण सामजिक –आर्थिक दबाव और विवाह संबंधी प्रथाएँ हैं।

राजनीतिक आयाम

राजनीतिक आयाम महिलाओ के सशक्तिकरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि रानीतिक महिलाओं को सत्ता, आवाज और पहचान होता है, जो उनके वास्तविक सशकतिकरण की नीवं है।

तालिका 4 : राजनीतिक आयाम (NFHS-5, रोहतास जिला)

राजनीतिक संकेत	**आँकड़े/स्थिति**
पंचायत स्तर पर महिला प्रतिनिधित्व	50 प्रतिशित आरक्षण के तहत सक्रिय भागीदारी
महिला मुखिया /सरपंच महिला	लगभग आधे पंचायतो में महिला
जिला परिषद/ ब्लॉक समिति मे महिला सदस्य	लगभग 45 प्रतिशत
निर्णय –निर्माण में महिला भागीदारी	बढती, लेकिन पुरूषो। का प्रभाव अभी भी अधिक
प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण	जीवका /SHG समूहो के माध्यम से नेतृत्व प्रशिक्षण

source –बिहार सरकार, पंचायती राज विभग (2023) नीति आयोग, महिला नेतृत्व और प्रतिनिधित्व रिपोर्ट (2020)

आँकड़ों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि पंचायती राज्य संस्थाओ मे 50 प्रतिशत आरक्षण ने राजनीतिक भागीदारी को मजबूत किया है। लेकिन निर्णय –निर्माण मे पुरूषों का प्रभाव अभी भी देखा जाता है। SHG और जीविका समूहों के माध्यम से नेतृत्व और प्रशासनिक प्रशिक्षण किया जा रहा है, जिससे उनकी क्षमता बढ़ रही है।

चुनौतियाँ

रोहतास जिले मे महिला सशक्तिकरण की दिशा मे सकरात्मक प्रगति हुई है, फिर भी राह मे कई स्थनिक बाधाएँ है। अशिक्षा और बाल विवाह अब भी व्यापक है (कुमार, 2018)। घरेलू हिंसा और लैंगिक भेदभाव महिलाओ की स्वतंत्रता को सीमित करते है। स्वास्थ्य परिवहन सेवाओ की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित हैं। (भारत सरकार, 2021)। आर्थिक अवसरो की कमी, प्रशिक्षण केंद्रो की कमी और राजनीतिक स्तर पर सीमित प्रतिनिधत्व भी प्रमुख चुनौतीयाँ हैं (शर्मा, 2020)।

संभवनाएँ

शिक्षा और डिजिटल साक्षरता का विस्तार महिलाओं की आधुनिक समाज से जोड़ सकता है (कुमार, 2024; नीति आयोग, 2020) महिला उधमित को बढावा देकर उन्हे आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है (मिश्रा, 2021)। पंचायत स्तर पर महिला नेतृत्व को प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराना आवश्यक है (शर्मा 2020)।

सांस्कृतिक बदलाव और जागरूकता अभियान से समाज मे सकारात्मक परिवर्तन संभव है (तिवारी, 2024)

सुझाव

महिला सशक्तिकरण को सुदृढ़ करने के लिए शिक्षा और विशेष रूप से डिजिटल साक्षरता का विस्तार आवश्यक है। विधालयों और प्रशिक्षण केंद्रो में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन कर महिलाओं को आधुनिक तकनीक और कौशल से जोड़ना, तथा जागरूकता लाना चाहिए। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुलभ करने के लिए मोबाइल क्लीनिक और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों को मजबूत करना आवश्यक है। आर्थिक दृष्टि कोण से, माइक्रो–क्रेडिट योजनाओं और महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करके उन्हे आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। पंचायत स्तर पर महिला नेतृत्व को प्रशिक्षित करना और संसाधन उपलब्ध कराना भी आवश्यक है ताकि महिलायों स्वयं निर्णय लेने में सक्षम हो सके और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभा सकें (नीति आयोग, 2020, बिहार सरकार 2023)

निष्कर्ष

महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता भारतीय समाज के विकास की आधारशिला हैं यह केवल सामाजिक न्याय का प्रश्न नहीं है, बल्कि आर्थिक प्रगति और लोक तांत्रिक मजबूती के लिए भी आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDG-5) में लैंगिक समानता को वैश्विक प्राथमिकता दी गई है। (United National Development Programme, 2023) भारत में संविधान के अनुच्छेद 14, 15, और 16 समानता के अधिकार को सुनिश्चित करते हैं, जबकि बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं, महिला शक्ति केन्द्र और स्वयं सहायता समूह जैसी

योजनाएँ महिलाओं की स्थिति सुधारने का प्रयास करती है (Ministry Of Women and Child Development, 2021)

यह शोध रोहतास जिले की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों पर केंद्रित है, जहाँ शिक्षा स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी जैसे आयामों का विश्लेषण किया गया है। जनगणना 2011 और NFHS-5 (2021) के आँकड़े दर्शाते हैं कि महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हुआ है, लेकिन रोजगार और निर्णय–प्रक्रिया में उनकी भागीदारी अभी भी सीमित है। सामाजिक बाधाएँ जैसे पितृसत्तात्मक सोच, बाल विवाह और घरेलू हिंसा लैगिंक समानता की राह में प्रमुख अवरोध बनी हुई हैं।

संदर्भ सूची –

1. कुमार, अजय (2024). शिक्षा में महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकार संरक्षण, International journal of innovative research in computer technology (IJIRCT)
2. कुमार, आर. (2018) ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण. नई दिल्ली : सामाजिक शोध प्रकाशन।
3. तिवारी, पूनम. (2024). ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में सूचना एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका. International Journal of Creative research Thoughts (IJCRT).
4. नीति आयोग. (2020). भारत में महिला सशक्तिकरण पर वार्षिक रिपोर्ट नई दिल्ली : नीति आयोग।
5. बिहार सरकार (2023) बिहार राज्य महिला नीति रिपोर्ट. पटना : महिला विकास निदेशालय।
6. भारत सरकार .(2011). जनगणना 2011 : बिहार राज्य प्रोफाइल. रजिस्ट्रार जनरल एवं जनगणना आयुक्त, नई दिल्ली।
7. भारत सरकार (2021) राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5), 2019-21 : बिहार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली।
8. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (2022). महिला सशक्तिकरण योजनाएँ और उपलब्धियाँ. भारत सककार, नई दिल्ली।
9. मिश्रा, एस. (2021). आर्थिक आत्मनिर्भरता और महिला विकास . दिल्ली : नीति संवाद।
10. शर्मा, पी. (2020). बिहार में महिला नेतृत्व और पंचायत राज. पटना : नीति शोध संस्थान।
11. शर्मा, विष्णु कुमार, (2025). डिजिटल युग में महिला सशक्तिकरण : अवसर और चुनौति. Multi-Subject Journal, 7 (1).
12. सिंह, एल. (2019) महिला भागीदारी और स्थानीय शासन. वाराणसी : जन विकास प्रकाशन।
13. सुप्रिया, स्वीटी. (2024) Outcome Of Women's Reservation in Panchayati Raj Institutions in Bihar. International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
14. सुषमा, कुमारी. (2018). Education status of women in Rohtas District, Bihar State International Journal of Academic Research (IJAR).